11

राजस्थान के लोक-नाट्य

राजस्थान की संस्कृति बहुत प्राचीन और जीवन्त है। सदियों से वहाँ के लोक-जीवन में भोपा, भांड, स्वांग, बहरूपियें, मदारी, नट, बाजीगरों आदि का प्रदर्शन मनोरंजन हेतु होता रहा है। सामाजिक और सामुदायिक भावनाओं की अभिव्यक्ति के माध्यम-स्वरूप लोक-नाट्यों की स्वरूप परम्परा राजस्थान में पनपी। ख्याल, रम्मत, तमाशे, नौटंकी, लीला, भवाई, गवरी, फड़ इत्यादि लोकनाट्यों के रूप में विकसित हुए और यहाँ के जन-जीवन में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया। आज रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा आदि विकसित मनोरंजन के साधन होने के कारण परम्परागत लोक-नाट्य कम होते जा रहे हैं। आवश्यकता है कि उन्हें संरक्षण देकर जीवित रखा जाए। राजस्थान के परम्परागत लोकनाट्यों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है-

(1) ख्याल- लगभग 18वीं सदी के प्रारम्भ से ही राजस्थान में लोकनाट्यों के मंचित होने के प्रमाण मिलते हैं। कुचामणी, शेखावाटी, जयपुरी, अली बख्शी, तुर्रा कलंगी, किसानगढ़ी, मांची, हाथरसी आदि भिन्न-भिन्न ख्यालों के स्वरूप राजस्थान के विभिन्न हिस्सों में प्रचलित रह हैं। **कुचामणी ख्यालों** के प्रवर्त्तक **लच्छीराम** थे। उन्होंने अनेक ख्यालों की रचना की, जिनमें से कोई 25 ख्याल जोधपुर के खत्री भीकमचन्द ने प्रकाशित किए। ये ख्याल हास्य एवं विनोद प्रधान थे। मनोरंजन के साथ-साथ समाज-सुधार और नैतिक आदर्शों का दिग्दर्शन भी इनमें यथार्थ परिस्थितियों के बीच व्यंग्यात्मक प्रखरता के साथ हुआ है। इनमें यहाँ की संस्कृति का भरपूर चित्रण मिलता है।

चिड़ावा के **नानूराम** 'शेखावाटी ख्याल' शैली के प्रसिद्ध नाट्यकार थे। इन्होंने **हीरा-रांझा, हरिशचन्द्र, भर्तृहरि, जयदेव** आदि कई ख्यालों की रचना की। इनके शिष्यों में दूलिये राणा का नाम शेखावाटी ख्यालों में बहुत प्रसिद्ध हुआ जो अपनी 80 वर्ष की अवस्था तक ख्यालों का मंचन करते रहे। दूलिये राणा का पुत्र सोहनलाल एवं पौत्र बंशी बनारसी ने भी शेखावाटी ख्याल शैली को जीवित बनाए रखा है।

जयपुर ख्याल की अपनी अलग विशेषताएँ हैं। इसमें स्त्री पात्रों की भूमिकाएँ स्त्रियाँ ही निभाती हैं। यह शैली अन्य शैलियों की तुलना में अधिक मुक्त और लचीली है। यही कारण है कि इसमें नए प्रयोगों की अधिक सम्भावना है। जयपुरी ख्यालों में गुणी जन खाने के कलाकार भी भाग लेते रहे हैं।

तुर्रा-कलंगी ख्याल की रचना मेवाड़ के **शाह अली** और **तुकनगीर** नामक दो मुसलमान पीरों ने लगभग चार सौ वर्ष पूर्व की। इसके माध्यम से शिव और शक्ति के विचारों को लोक-जीवन तक पहुँचाया। तुर्रा के खिलाड़ी हिन्दू होते हैं और कलंगी के मुसलमान। गाँव के किसी चौराहे पर एक भव्य रंगमंच का निर्माण किया जाता है। मंच के दोनों ओर लगभग 50 फीट ऊंची बल्लियों के सहारे दो महल बनाए जाते हैं, जिनमें से एक से मलिकाएँ अभिनय करती हुई उतरती हैं और दूसरे से पुरुष-पात्र। बीच के रंगमंच पर ख्याल के सूत्रधार, जो बहुधा गाँव के वयोवृद्ध भाट होते हैं ख्याल के पद गाते हैं और उन्हीं के सामने मंच के नीचे बैठे हुए शहनाई और नक्कारे वाले उनकी धुन बजाते हैं। अभिनेता उनके साथ ही रंगमंच के एक छोर से दूसरे तक गाते-नाचते हुए बढ़ते हैं और अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।

मूंडवे के **शिवदयाल** ने भी **नागोरी चतुर सुजाण** और **सूरत की वन मालन, कंवर रिसालू** और **राणी बालक दे** आदि ख्याल लिखे हैं।

बीकानेरी ख्याल एक समय बड़े प्रसिद्ध थे। लम्बे-लम्बे घेरदार झग्गों एवं पेचदार पगड़ियों वाले पात्र जब बन-ठनकर आते हैं तो देखते ही बनता है। बड़े-बड़े नक्कारों और नफीरियों पर नाट्य-संवाद होता है। सभी जातियों और सम्प्रदाय के लोग इनमें भाग लेते हैं। बीकानेर में **श्री मोतीलाल** एक प्रसिद्ध ख्याल लेखक हुए। उन्होंने गोपीचन्द और अमरसिंह राठौड़ पर ख्याल लिखे।

(2) तमाशा- तमाशे की परम्परा लगभग ढाई सौ वर्ष पुरानी है। जयपुर के महाराजा प्रतापसिंह ने इस परम्परा का प्रारम्भ किया। **जयपुरी ख्याल** और **ध्रुपद गायकी** का यह सम्मिलित रूप है। इसका प्रारम्भ पण्डित बंशीधर भट्ट ने किया और उस्ताद परम्परा फूलजी भट्ट ने प्रारम्भ की। गोपीचन्द, हीर-रांझा आदि तमाशे खेले जाते रहे हैं।

(3) रम्मत- रम्मत बीकानेर, जैसलमेर, पोकरण और फलौदी क्षेत्र में होती रही है। लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व बीकानेर में होली आदि अवसरों पर होने वाली लोक-काव्य प्रतियोगिताओं में इनका उद्भव हुआ। कुछ लोक-कवियों ने राजस्थान के प्रसिद्ध लोक नायकों और महापुरुषों पर काव्य रचनाएं की और इन्हें रंगमंच पर प्रस्तुत किया। बीकानेर के मुख्य लेकखक **सर्वश्री मनीराम व्यास, तुलसीराम, फागू महाराज** और **सूआ महाराज** रहे। रम्मतों में अभिनय और नृत्य तो खास नहीं रहता पर गायन का कार्य बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। साहित्यिकता रम्मतों की मुख्य विशेषता है। रम्मतों के गीत चौमासा, लावणी (भक्ति और श्रृंगार विषयक), गणपति वंदना तथा व्यक्ति विशेष से संबंधित रहते हैं।

जैसलमेर में भी रम्मतें प्रचलित रही हैं। जैसलमेर में ख्याल भी लिखे गए हैं। **कवि तेज ने मूमल म्हदरे का खेल, छेले तम्बोलन का खेल, नैना खसम को खेल, भर्तहरि का ख्याल** (रंगत मारवाड़ी) आदि रचे हैं। कुछ लोग इनको **रम्मत** भी कहते हैं।

ख्याल और रम्मत संगीत नाट्य है। इनमें प्रदर्शन औ रचना की दृष्टि से कुछ अंतर है। जैसलमेर में रम्मत-कलाकारों में **श्री सकतमल, श्री तुलसीदास, श्री जीतमल** प्रमुख थे। ये रातभर रम्मत करके सुबह लक्ष्मीनारायण के मंदिर जाते थे। पोकरण में श्री परमानंद, गिरधारी सेवक और तेज कवि रम्मतें किया करते थे।

(4) भवाई- भवाइयों के खेल अधिकतर बीकाजी के होते हैं। वे इनमें दोहे भी देते हैं। गुजरात की सीमा से लगे राजस्थान के क्षेत्रों में **भवाई** नामक नृत्यनाटिका बहुत प्रसिद्ध है। इस नृत्य-नाटिका के अनेक तकनीकी पक्ष हैं। इस शैली पर आधारित एक नाटिका '**जसमा ओडण**' भारत से बाहर **इंग्लैण्ड** और **अमेरिका** में भी मंचित की गई। **शांता-गांधी** की लिखी यह नृत्य नाटिका '**सगौजी**' और '**सगीजी**' के रूप में भोपा-भोपी एवं कई दूसरे हास्य चरित्रों के साथ प्रस्तुत की जाती है। भवाइयों में ढोलक, झांझ, सारंगी बजाते हैं और इनमें मशाल का प्रयोग भी होता है।

(5) गवरी- गवरी अरावली क्षेत्र (मेवाड़) में रहने वाले भीलों की सामुदायिक गीतिनाट्य शैली है। भील जाति के लोग चालीस दिन तक **गवरी-उत्सव** उदयपुर के आस-पास के क्षेत्रों में आयोजित करते हैं। इन दिनों वे एक बार ही भोजन करते हैं। इस नाट्य में स्त्रियों का काम पुरुष ही करते हैं। इस नृत्य का महानायक एक वृद्ध होता है जो शिव का अवतार समझा जाता है। इस नाट्य में शिव की प्रमाणिक कथा का कहीं प्रयोग नहीं होता है। अनेक काल्पनिक परन्तु युगों की परम्पराओं से युक्त कथा प्रसंगों के आधार पर नाना प्रकार के खेल इस नाट्य में दिखलाए जाते हैं। इस नृत्य-नाट्य के प्रमुख प्रसंग **बणजारा, भियांवड़, नट-नटी, खेतूड़ी, बादशाह की सवारी, खेड़लिया भूत** आदि हैं। ये विचित्र वेशभूषा और अंग-मुद्राओं में प्रस्तुत किए जाते हैं। प्रत्येक प्रासंगिक कथा-नाट्य की समाप्ति पर भैरव के प्रमुख पुजारी भोपा के शरीर में भैरवनाथ का प्रवेश होता है। **मादळ** और **थाळ** पर ताल बजता है और समस्त भील अभिनेता कलात्मक मुद्राओं में ठुमक-ठुमक कर गोलाकार नाचने लगते हैं। **गवरी (गौरी)** संगीत-नाट्य अपनी शैली का एक ही नाट्य है जो समस्त भारतवर्ष के संगीत-नाट्यों से निराला है। गवरी की कथानक युद्ध, हार, मृत्यु और आखिर में जीवात्मा के वापिस जी उठने से सम्बद्ध होते हैं। देवी की कृपा से वापिस जीवित होना दिखा जाता है।

(6) फड़- भोपा जाति के लोग फड़ की प्रस्तुति करते हैं। फड़ 30 फीट लम्बे और 5 फीट चौड़े कपड़े की बनी होती है। इसके ऊपर वीर लोक नायक या लोकदेवता का जीवन चरित्र लोकशैली में चित्रों में चित्रित रहता है। भोपा उक्त फड़ को दर्शकों के सामने टांग देते हैं। भोपी फड़ के पास नाचती गाती पहुँचती है और जिस-जिस चित्र से संबंधित अंश गाए जाते हैं, उन्हें व डंडी से इंगित करती रहती है। भोपा भी रावणहत्था या जन्तर नामक वाद्य को

Scanned by CamScanner

बजाता हुआ नाचता रहता है। **पाबूजी राठौड़** और **देवजी सोलंकी** की दो प्रसिद्ध फड़-चित्र गाथाएँ हैं। पाबूजी की पड़ रावणहत्थे पर भील जाति का भोपा और देवजी की फड़ जंतर पर गूजर जाति का भोपा गाता है। ग्रामीण जन-जीवन में अशुभ के निवारण हेतु फड़ देखना शुभ माना जाता है।

(7) रासधरी- रासधारी का अर्थ होता है वह शख्श जो रास-लीला करता हो। लगभग 80-90 वर्षों पूर्व मोतीलाल जाट ने पहला रासधारी नाटक लिखा। यह राजस्थानी ख्याल का एक प्रकार है जिसमें बहुधा राम का सम्पूर्ण जीवन अंकित किया जाता है। इससे कृष्ण की क्रीड़ाओं का भान होता है। प्रारम्भ में जो रास अथवा अभिनय को धारण करे वही रासधारी कहलाता है। धीरे-धीरे सम्पूर्ण नाट्य का नाम ही **रासधारी** हो गया।

रासधारियों का कथा-प्रसंग प्राय: पौराणिक एवं धार्मिक होता है। इनमें माधुर्य होता है। इसमें **हरिशचन्द्र, मणिहारी, चंद्रावल गूजरी, रामायण, भर्तृहरि** आदि से संबंधित कथा-प्रसंग प्रदर्शित किए जाते हैं। मारवाड़ में इनका प्रचलन अधिक है।

रासधारियाँ विशिष्ट जातियों द्वारा एक व्यवसाय के रूप में खेली जाती हैं। भाट, निरसी, ढोली आदि का परम्परागत पेशा ही रासधारी नाचना है। रासधारी और ख्याल के कथा-प्रसंग समान होते हुए भी इनकी शैलियों में अन्तर होता है। ख्याल साधरण जन की कृतियाँ होने से इनमें हाव-भाव तथा गीतों की परिपक्वता नहीं होती। रासधारी में काम करने वाले अपने कला में बड़े प्रवीण होते हैं। इनकी मँडलियाँ एक गाँव से दूसरे गाँव में घूमती रहती हैं। इनके सिर पर साफानुमा जरीदार पगड़ियाँ और शरीर पर लम्बे घेरदार झग्गे होते हैं। इसमें स्त्रियों का काम पुरुष ही करते हैं। इस संगीत नाट्य में प्रचलित संगीत की अनेक मनमोहक तर्जे गाई और बजाई जाती हैं।

(8) स्वांग- स्वांग लोकनाट्य का एक रूप है, जिसमें किसी प्रमुख पौराणिक, ऐतिहासिक या किसी प्रसिद्ध लोक चरित्र या देवी-देवताओं की नकल कर उनके अनुरूप अभिनय किया जाता है। राजस्थान में स्वांग की परम्परा 13-14वीं शताब्दी से मानी जाती है। अनुमान किया जाता है कि मरुगुर्जरी के क्षेत्र में बहरूपियों के स्वांग-अभिनय की परम्परा रास-नाट्यों की परम्परा के समकालीन है।

मारवाड़ में रावल जाति के लोगों द्वारा स्वांग-प्रधान तमाशों का मंचन करने की परम्परा प्राचीन है। इनके स्वांगों में चाचा-बोहरा, सेठ-सेठाणी, मियां-बीबी, अर्धनारीश्वर, जोगी-जोगन, कालबेलिया, मैना-गुजरी और बीकाजी के स्वांग प्रमुख हैं। ये सब प्रकार का स्वाँग भरते हैं, परन्तु चारण का नहीं, क्योंकि रावल जाति चारणों की याचक है।

भाण्ड एवं भानमती हिन्दू और मुसलमान दोनों ही जातियों के होते हैं। धनरूप नामक भाण्ड इतना प्रसिद्ध था कि महाराजा **मानसिंह** ने उसे जागीर तक प्रदान की। **भानमती** भी मारवाड़ की एक विशिष्ट जाति है।

(9) लीला- लीला की कथा पुराण या पौराणिक आख्यानों से ली जाती है। इसमें धर्म और लोकतत्व की प्रधानता होती है। वर्तमान में लीला करने वाली मण्डलियाँ बहुत कम रह गई हैं जो **रामलीला** या **रासलीला** करती हैं।

(10) नौटंकी- नौटंकी भरतपुर, धौलपुर, करौली, अलवर, गंगापुर, सवाई माधोपुर क्षेत्र में बहुधा खेल करती हैं। नौटंकी के खेल विशेषकर मेलों, उत्सवों, त्यौहारों एवं शादियों के अवसरों पर होते हैं। भरतपुर-धौलपुर क्षेत्र में नत्थाराम की मण्डली नौटंकी के खेल के लिए प्रसिद्ध है। वैसे नौटंकी के कई अखाड़े हैं। नौटंकी वाले सत्यवादी हरिशचन्द्र, रूप-बसन्त,राजा भर्तृहरि, नल-दमयंती आदि नाटकों को दिखाते हैं।

(11) गंधर्व-नाट्य- गंधर्व पेशेवर नृत्यकार हैं। मूलत: ये मारवाड़ के निवासी हैं। लगभग 8 मास से अपने संगीत नाट्य **'अंजना सुन्दरी'** और **'मैना सुन्दरी'** के प्रदर्शनार्थ बाहर घूमते रहते हैं। इनके विषय जैन धर्म या जैनियों से संबंधित हैं और जैनी इन्हें रूचिपूर्वक देखते हैं। इनमें नृत्य विशेष नहीं रहता। वैसे तो ये खुले रंगमंच के नाटक हैं, परन्तु वर्तमान समय के किंचित प्रभाव से इनमें रंगीन पर्दे काम में लाए जाते हैं। ये आर्थिक दृष्टि से इसे खेलते हैं, किन्तु इनका धार्मिक उद्देश्य भी रहता है। आमतौर से ये कलाकार सभ्य, शिक्षित और शिष्ट होते हैं। अपने जीवन मे मिशन के रूप में वे इन्हें करते हैं।

लोक नाट्य के कलाकार (एक नजर में)

क्र.सं.	प्रकार	क्षेत्र	कलाकार	विशेषता
1.	तुर्रा-कलंगी ख्याल	मेवाड़	जयदयाल सोनी	इसमें तुर्रा (शिव) व कलंगी पार्वती के माध्यम से शिव भक्ति के विचारों को जनता तक पहुँचाया जाता है। **इसे मेवाड़ के शाहअली व तुकनगीर** नामक दो संतों पीरों ने इसकी रचना की।
2.	कुचामन ख्याल	कुचामन सिटी (नागौर)	लच्छीराम (नर्तक व लेखक) [चांद नीलगिरी, राव रिड़मल, मीरा-मंगल मुख्य ख्याल]	इस ख्याल में खुले मंच पर सामाजिक विषयों पर कटाक्ष किया जाता है। **इसका रूप ओपेरा जैसा है।** गीतों की प्रधानता है।
3.	शेखावाटी ख्याल (चिड़ावा ख्याल)	चिड़ावा (झुन्झुनू)	नानूराम, इलिया राणा	उच्च आलाप गायकी, अच्छा पद संचालन, प्रस्तुतीकरण में अल्हड़पन इसकी विशेषताएं हैं।
4.	हेला ख्याल	दौसा, करौली, सवाई माधोपुर	-	हेला देना (लम्बी टेर में आवाज देना) मुख्य विशेषता है।
5.	अलीवक्षी ख्याल	अलवर	अलीवक्षी खाँ	भक्ति रस व नृत्य संगीत की प्रधानता है। इसमें कृष्ण विषयक ठुमरिया अत्यन्त प्रसिद्ध है।
6.	कन्हैया ख्याल	महावीरजी (दौसा, करौली, सवाई माधोपुर)	-	मीणा जाति की इस विद्या को अब अन्य जातियाँ भी गाती हैं। यह गोल घेरे में खड़े होकर गाया जाता है।
7.	नागौरी ख्याल	नागौर क्षेत्र	-	इस ख्याल में मुस्लिम प्रेमाख्यान भी मिलते हैं। गजल का प्रयोग नारी रूप सौन्दर्य के लिए हुआ है।
8.	बैठकी नाट्य	दौसा, सवाईमाधोपुर, करौली	-	लोकनाट्य का एक प्रकार, जो जमीन पर बैठकर प्रदर्शित किया जाता है। यह बैठक दो दलों के आमने-सामने होती है। इसमें छंदबद्ध सवाल-जवाब होते हैं।
9.	दंगली नाट्य	सवाईमाधोपुर, दौसा, भरतपुर, करौली	-	बैठकी ख्यालों की तरह दंगली ख्यालों के दंगलों की भी यहाँ विशेष परम्परा रही है, जो विशिष्ट गायकियों तथा राग-रागनियों में कोई कथा-आख्यान, समसामयिक घटना प्रसंग की काव्यकली प्रारम्भ करते हैं। बारी-बारी से वादी प्रतिवादी दल अपना-अपना पक्ष प्रबलता से प्रस्तुत करते हैं।
10.	स्वांग नाट्य	सामान्य रूप से सम्पूर्ण राजस्थान में प्रचलित	-	किसी के रूप को अपने में आरोपित कर उसे **प्रस्तुत करना ही स्वांग है।** असल की नकल रहती है। **बहरूपिया नाम बहुरूपों** को प्रस्तुत करने के कारण पड़ा। ये स्वांग नकल होते हुए भी असल होने का भ्रम देते हैं।
11.	नुक्कड़ नाट्य	सामान्य रूप से सम्पूर्ण राजस्थान में प्रचलित		गाँव या शहर के किसी नुक्कड़ पर कोई खेल-तमाशा नाट्य प्रदर्शन, नुक्कड़ नाट्य कहलाता है।

❑❑❑

Scanned by CamScanner